इन्सान बन्ने की फिकर करे

मुफ्ती तकी उस्मानी [दब]

इस्लाही खुत्बात उर्दू/२३ से खुलासा लिप्यांतरण किया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हज़रत हन्ज़लाह (रदी) कातिब ए वही थे

हज़रत हन्ज़लाह (रदी) जलीलउल कदर सहाबी थे ये उन सहाबा में से थे जो वही को लिखने वाले थे जब रसूलुल्लाहﷺ पर वही नाज़िल होती और कुरान शरीफ नाज़िल होता तो रसूलुल्लाहﷺ ने कुछ सहाबा (रदी) को मुकर्रर किया हुवा था रसूलुल्लाहﷺ उनमे से किसी को बुलवाते और उनको वही के अल्फाज़ सुनते और वो उनको लिख लिया करते थे. वो फरमाते हे एक मर्तबा में रास्ते से गुज़र रहा था के हज़रत अबू बक्र (रदी) से मुलाकात हो गयी सलाम दवा हुवी हज़रत अबू बक्र (रदी) ने मुझ से पूछा हन्ज़लाह किया हाल हे? में अपनी धुन में मगन था मेने अपनी उसी धुन में जवाब दिया हन्ज़लाह तो मुनाफिक हो गया. हज़रत अबू बक्र (रदी) ने फरमाया ये तुम किया कह रहे हो कैसे मुनाफिक हो गए? उन्होंने ने जवाब दिया के हम रसूलुल्लाहﷺ की मजलिस में जाते और बैठते हे

तो वह हमारे दिल की ये हालत ऐसी होती हे की हमारे दिल अल्लाह ताला की तरफ मुतवज्जेह होते हे जन्नत, जहन्नम और आखिरत का धियान पैदा होता हे गोया हम उनको अपनी आँखों से देख रहे हे और रसूलुल्लाह ﷺ की बाते और अल्लाह ताला की याद दिल में बैठ जाती हे. लेकिन जब हम मजलिस से उठकर घर जाते हे और अपने बीवी बच्चो से मिलते हे और काम-काज में लग जाते हे तो हमारे दिल की वो कैफियत जो आप की मजलिस में तारी हुवी थी वो खतम हो जाती हे ये निफाक का ही काम तो हो गया लिहाज़ा में तो मुनाफिक हो गया.

सहाबा (रदी) के मकाम का अंदाज़ा लगाए उनसे कोई नेक अमल छूटा नहीं और कोई गुनाह का काम भी नहीं किया सिर्फ इतनी सी बात थी के दिल की वो कैफियत बाकी नहीं रही जो रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में रहती हे तो इनको फिक्र हो गयी के में मुनाफिक तो नहीं हो गया हमारा ये हाल हे के हमारे अमल छूट जाए, नमाज़े निकल जाए, जमात निकल जाए, गुनाह हो जाए, तो भी हम नेक के नेक ही हे कोई फिक्र

नहीं सहाबा (रदी) का ये हाल था अमल को तो छोडो सिर्फ दिल की कैफियत बदली तो इस पर उनको फिक्र लग गयी के में तो मुनाफिक हो गया.

उनका ठिकाना रसूलुल्लाहﷺ का दरबार था

हज़रत अबू बक्र (रदी) इनपर हैरान हो रहे थे के तुम ये किया बात कह रहे हो लेकिन जब हज़रत हन्ज़लाह (रदी) की ये बाते सुनी तो खुद हज़रत अबू बक्र (रदी) को भी अपनी फिक्र लाहिक हो गयी और फरमाया तुम जो कैफियत बता रहे हो ये बात तो मेरे साथ भी पेश आती हे में भी रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में जाता हु तो मेरे दिल का हाल और होता हे और जब बहार आता हु तो वो कैफियत बाकी नहीं रहती तो चलो दोनों मिलकर रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में जाते हे और पूछते हे हमारी ये हालत कैसी हे? चुनांचे दोनों रसूलुल्लाहﷺ की मुलाकात के लिए चल पडे. जब दोनों हझरात रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में हाज़िर हुवे तो दाखिल होते ही हज़रत हन्ज़लाह (रदी) ने फरमाया या रसूलुल्लाह! हन्ज़लाह तो मुनाफिक हो गया, हज़रत हन्ज़लाह (रदी) ने फरमाया या रसूलुल्लाह! जब

हम आप के पास आते हे तो हमारे दिल की कैफियत कुछ और होती हे अल्लाह ताला का धियान और तसव्वुर होता हे आखिरत की फिक्र होती हे जन्नत और जहन्नम गोया हमारे सामने होते हे लेकिन जब घर जाते हे बीवी बच्चो से मिलते हे और अपने दुनियावी काम धंदो में मशगूल हो जाते हे तो अक्सर बाते भूल जाते हे.

जब रसूलुल्लाहﷺ ने हज़रत हन्ज़लाह (रदी) की ये बात सुनी तो रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कसम हे उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान हे यानि (अल्लाह ताला) अगर तुम हमेशा एक ही हालत में रहो यानी जिस हालत में तुम मेरी मजलिस में रहते हो तो अल्लाह ताला के फरिश्ते तुम से बिस्तरों पर आकर मुसाफा करे लेकिन ऐ हन्ज़लाह ये वकत-वकत की बात हे ये निफाक की बात नहीं के किसी वकत एक हालत और कैफियत जियादा दिल पर तारी रहती हे और किसी वकत वो कैफियत बाकी नहीं रहती लिहाज़ा इससे घबराने की कोई बात नहीं और ये कोई निफाक की बात नहीं इससे तुम्हारा कोई नुकसान नहीं.

हर वकत खालिस और खटक दिल में रहना चाहिए

ये अजीब ओ-गरीब हदीस हे और इसमें इतने मजामीन छुपे हुवे हे -

पहली बात जो इस हदीस से मालूम होती हे वो ये के सहाबा (रदी) को हर वकत फिक्र लगी रहती थी के पता नहीं हमारी किया हालत हे? इसी फिक्र का नाम “तकवा” हे. हमारे डॉ अब्दुल हाई (रह) फरमाया करते थे “तकवा” के माने हे “खलिश” और “खटक” के पता नहीं मेरा ये अमल दुरूस्त हो रहा हे या नहीं ये जो “इत्मिनाने कामिल” होता ये बडा खतरनाक मामला होता हे आखरी वकत तक और मरते दम तक आदमी को ये फिक्र रेहनी चाहे के पता नहीं में सही रास्ते पर हु, ये सही हे या गलत? ये फिक्र सहाबा (रदी) को लगी हुवी थी और इसी फिक्र ने उनको बुलंदी के किस मकाम पर पोहचा दिया था.

दूसरा सबक इस हदीस से ये मिल रहा हे के रसूलुल्लाहﷺ ने हज़रत हन्ज़लाह (रदी) को जो तसल्ली दी इससे ये बात मालूम हुवी के दीन के अंदर दिल की जो कैफियत और हालत हे वो

असल मकसूद नहीं हे बल्कि असल मकसूद अमल हे अगर अमल दुरूस्त और अल्लाह ताला की राजा के मुताबिक हे तो “इंशाअल्लाह” नजात होगी अब आज कल जाहिल पिरो और फकीरो ने ये बात मशहूर कर दी हे के दिल जारी होना चाहिए और दिल धडकना चाहिए याद रखे इसका शरीअत तरीकत और तसव्वुफ से कोई ताल्लुक नहीं असल मकसूद अमल दुरूस्त होने चाहिए.

तीसरा सबक जो इस हदीस से मिला वो ये के ब-जाहिर ऐसा लग रहा हे के जब रसूलुल्लाहﷺ ने हज़रत हन्ज़लाह (रदी) से फरमाया के ‘अगर तुम्हारी एक जैसी हालत हर वकत रहे तो फरिश्ते तुम से आकर मुसाफा करे’ इससे बाज़ लोगो को धोका हो गया के इन्सान की कामिल हालत वोही हे के जिस में फरिश्ते उस से आकर मुसाफा किया करे यानि आदमी अल्लाह ताला की याद में इस दर्जा मशगूल व मदहोश रहे के इसको किसी दूसरी चीझ का ख्याल ही न आये बाज़ लोग धोके में पडे हुवे हे.

इन्सान के लिए इन्सान रहना कमल की बात हे, फरिश्ता बनना कमल की बात नहीं

खूब समझ लीजिए मौलाना याक़ूब ननोतवी (रह) ने इस हदीस की तशरीह में बडी अजीब बात इरशाद फरमाई हे ये बात सही नहीं के वो कामिल हालत हे जिसमे फरिश्ते आकर मुसाफा करे और हज़रत हन्ज़लाह (रदी) इस वकत जिस हालत में थे वो नाकिस (कमी) हालत थी अगर उनकी हालत नाकिस थी तो फिर हज़रत अबू बक्र (रदी) की हालत को भी नाकिस कहना पडेगा (नौज़बिल्लाह) हाला के रसूलुल्लाहﷺ के बाद हज़रत अबू बक्र (रदी) से अफझल मखलूक इस दुनिया में पैदा ही नहीं हुवी, लिहाज़ा ये हालत जो इन दोनों हजरात की थी वो कामिल हालत थी. इसलिए के रसूलुल्लाहﷺ का ये फरमाना के ‘फरिश्ते आकर तुम से मुसाफा करे’ का मकसद ये था के अगर हर वकत अल्लाह ताला की तरफ ध्यान रहे और किसी और तरफ ध्यान ही न जाए तो फिर तुम इन्सान नहीं रहोगे फरिश्ते बन जावोगे और इन्सान के लिए कमल की बात यही हे के वो इन्सानी तकाज़ों

के साथ रहे अगर फरिश्ते बन जाये तो ये कमल नहीं बल्कि ये तुम्हारा नुकसान हे.

रसूलुल्लाहﷺ ने उनको तसल्ली देते हुवे फरमाया के तुम्हे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं इसलिए के तुम इस वकत जिस हालत में हो यही तुम्हारा कमल हे और यही इन्सानियत का कमल हे और जो फरिश्तो वाली हालत जिसमे किसी और चीझ का ध्यान ही न आये वो तुम्हारे लिए कमल की बात नहीं हे वो फरिश्तो के लिए कमल की बात हे तुम्हारे लिए कमल यही हे के अल्लाह ताला की तरफ भी ध्यान रहे और इसके साथ दूसरे काम भी अंजाम देते रहो जो तुम्हारे फराइज़ में से हे यानि अल्लाह ताला के हुकूक के साथ बन्दों के जो हुकूक तुम्हारे साथ वाबस्ता किये हुवे हे उन्हें भी अदा करते रहो तो ये कमल की बात हे न ये के तुम फरिश्ते बन जावो और अल्लाह ताला के सिवा किसी और चीझ का ध्यान ही न आये.

गलबै हाल की कैफियत मकसूद नहीं

ये जो बाज़ बुज़ुर्गो से मन्कूल हे वो सुबह से शाम तक ‘इस्तिगरक’ की हालत में रहते थे यहाँ तक के अपने बच्चो तक

को नहीं पहचानते थे, जैसे शैख अब्दुल कुददुस गंगोही (रह) के बारे में मशहूर हे के उनके पास उनके बच्चे आये और आकर सलाम किया तो आप ने उन्हें पहचाना नहीं और उन बच्चो से पूछा के तुम कौन हो? उन्होंने कहा के हम आप ही के तो बच्चे हे तो ये अल्लाह की याद में इस कदर मसगुल थे के बच्चो को भी नहीं पहचान रहे थे ये गलबाये हाल की कैफियत हे और ये दीन में मकसूद नहीं हे ये हजरात अपने गलबाये हाल में माजुर हे और ये कैफियत तमन्ना करने की चीझ नहीं हे तमन्ना करने की चीझ वो ही हे जो रसूलुल्लाहﷺ की सुन्नत हे. रसूलुल्लाहﷺ पर कभी इस्तिगरक नहीं तारी रहता तमन्ना करने की चीझ और इन्सानियत का कमाल ये हे के जिहाद भी हो रहा हे और रात में नमाज़ के लिए खडे हे और पाव में वरम भी आ रहा हे और हज़रत आइशा (रदी) के साथ दौड लगाई जा रही हे ये हे कमल और यही इन्सानियत का तकाजा भी हे लिहाज़ा इस बात की तमन्ना मत करो के फरिश्ते बन जाए अरे आदमी बन्ने की फिक्र करे और जब आदमी बन्ने की ख्वाहिश और फिक्र करेंगे तो इन्सानियत के जो तकाजे हे उनको भी अंजाम देगा.

हर वकत अल्लाह ताला की तरफ ध्यान रहे

अलबत्ता इतनी बात ज़रूरी हे के काम तो सब करो लेकिन अक्सर वकत अल्लाह ताला की याद और ध्यान रहे बस ये हे मकसूद ये जो तरीकत और तसव्वुफ में रियाज़ते और मुजाहदत कराये जाते हे उन सब की मंज़िले मकसूद यही हे के अल्लाह ताला से निस्बत हासिल हो जाए और ये निस्बत किया हे? “निस्बत” ये हे के अक्सर अवकात अल्लाह ताला की तरफ ध्यान रहे जिस को बाज़ हजरात कसरते ज़िकर और दवामे टाट से ताबीर करते हे ज़बान से कसरत के साथ अल्लाह ताला का ज़िकर हो और दिल में अल्लाह ताला का ध्यान हो और अल्लाह ताला की इबादत में जियादा वकत गुज़रे और कोई गुनाह सरजाद न हो बस इसी का नाम निस्बत हे. जब ये निस्बत हासिल हो जाती हे तो फिर उस शख्स की ये कैफियत हो जाती हे वो दफ्तर में काम भी कर रहा हे वो बीवी बच्चो से हंस बोल भी रहा हे और दूसरे दुनयावी काम भी कर रहा हे लेकिन अल्लाह ताला से उसका रिश्ता और ताल्लुक भी जुडा हुवा हे और इसी का नाम निस्बते बातिनी हे

और इसी को हुसूले निस्बत भी कहते हे. इसी को सूफिये किराम मुशादा कहते हे ‘मुशादा’ का मतलब ये हे के अल्लाह ताला की सिफात और अल्लाह ताला की याद दिल में जम जाना बाज़ लोग मुशादा का ये मतलब समझते हे के अल्लाह ताला का ‘दीदार’ हालाके इस दुनिया में अल्लाह ताला को कोई नहीं देख सकता और किसी ने नहीं देखा हज़रत मूसा (अल) भी नहीं देख पाए लिहाज़ा अल्लाह ताला को तो नहीं देख सकते लेकिन अल्लाह ताला की तरफ ध्यान बन-जाता हे के में जो काम कर रहा हु वो अल्लाह ताला की मर्ज़ी के मुताबिक हो रहा हे या नहीं? अल्लाह हमे भी ये कैफियत और ध्यान नसीब फरमाए आमीन.

दिल की सुई अल्लाह ताला की तरफ हो

ये कैफियत ऐसी हे जो कहने सुनने से समझ में नहीं आती लेकिन होता ये हे के जब इन्सान कसरत से अल्लाह ताला का ज़िकर करता हे और अल्लाह ताला की इबादत में लगा रहता हे तो फिर अल्लाह ताला की याद और ध्यान इन्सान के दिल में पेवस्त हो जाती हे ये एक कैफियत हे और इन्सान इसी में चल

फिर रहा हे और दूसरे काम भी कर रहा हे लेकिन उसके दिल की सुई अल्लाह ताला की तरफ होती हे. जैसे आप ने कंपास देखा होगा इसकी सुई हमेशा नार्थ की तरफ होती हे इसको चाहे जिस तरफ भी घुमावो फिरवो लेकिन इसकी सुई हमेशा नार्थ की तरफ ही होती हे इसी तरह इस दिल की सुई भी अल्लाह ताला की तरफ मुद जाती हे और आदमी कही भी जाए और आदमी किसी भी हालत में हो और चाहे वो तन्हाई में हो या लोगो के दरमियान हो लेकिन उसके दिल की सुई अल्लाह ताला की तरफ मुडी हुवी हे बस इसी का नाम निस्बते बातिना हे. अल्लाह हम सब को ये निस्बत आता फार्मा दे. आमीन.

हाथ काम-में और दिल अल्लाह ताला की याद-में

लेकिन इस निस्बते बातिना के ये मतलब नहीं हे के इस्तिगरक तारी हो गया और किसी तरफ ध्यान ही नहीं जाता ऐसा नहीं बल्कि ज़रूरत के मुताबिक दूसरी चिझो की तरफ भी ध्यान जाता हे और इन्सान दूसरे दुनियावी काम भी करता हे लेकिन दिल की सुई हमेशा अल्लाह ताला की तरफ लगी रहती हे जैसे किसी ने किया खूब कहा हे ‘हाथ तो काम काज में लगा हुवा हे

लेकिन दिल का ताल्लुक अल्लाह ताला से जुडा हुवा हे’ बस अल्लाह ताला ये कैफियत आता फार्मा देते हे और ये कैफियत न तो बयां करने से हासिल होती हे न सुनने से हासिल होती हे. इसकी मिसाल ऐसी हे जैसे किसी शख्स को अचानक कोई परेशनी या गम लाहिक हो गया, मसलन बच्चा सख्त बीमार हो गया अब दिन रात इसी परेशानी में मुब्तला हे लेकिन इसी परेशानी के आलम में खाना भी खा रहा हे और दूसरे दुनियावी काम भी कर रहा हे लेकिन ज़हन इसी तरफ लगा हुवा हे के बच्चा बीमार हे, या कोई खुशी की खबर सुन ली और उसके नतीजे में इसको इतनी जियादा खुशी हुवी के दिल ओ दिमाग पर खुशी छा गयी और अब वो इसी हालत में खाना भी खा रहा हे लोगो से मुलाकाते भी कर रहा हे लेकिन दिल पर खुशी की एक कैफियत हे वो अपनी जगह पर बरकरार हे.

ज़बान पर ज़िकर पहली सीडी (लैडर) हे

बिलकुल इसी तरह अल्लाह की याद अल्लाह का ध्यान दिल में पेवस्त हो जाता हे इस वकत वो दुनिया के सारे काम कर रहा

होता हे लेकिन उसके दिल की सुई अल्लाह ताला की तरफ लगी हुवी होती हे बस यही मकसूद हे इसको चाहे निस्बत कह लो या इसको मुशादा कह लो ये सब सूफिये किराम की इस्तिलाहट हे लेकिन हज़रत थानवी (रह) फरमाया करते थे इन सब इस्तिलाहट के फेरो में मत पडना. हासिल ये के इन्सान अल्लाह ताला के ज़िकर की प्रैक्टिस करे और उसकी पहली सीडी (लैडर) ज़बानी ज़िकर हे के चलते फिरते उठते बैठते अल्लाह ताला का ज़िकर जारी रहे जब ये ज़िकर जारी रखता हे तो आहिस्ता-आहिस्ता वो ज़िकर दिल की तरफ मुन्तकिल होना शुरू हो जाता हे. बाज़ लोग कहते हे सिर्फ ज़बान से ज़िकर करने से किया हासिल? जब दिल में ज़िकर नहीं, बात ये हे के जब तक ज़बान पर ज़िकर नहीं होगा तो फिर दिल में भी ज़िकर नहीं आएगा, इसलिए ज़बान से ज़िकर करना ये पहली सीडी हे इसलिए चलते फिरते ज़िकर करने की आदत डालो मशक करने से ये चीझ हासिल हो जायेगी 'इन्शाअल्लाह'.

अल्लाह मुझे भी और आप को भी इस पर अमल करने की तौफीक आता फरमाए. आमीन.